आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received:11/03/2023; Published:24/03/2023

कविता

क्या समृद्धि,अभिमान का द्वार है

- डॉ. धर्मेंद्र सिंह
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्यार ही हर जगह खुशियों का द्वार है
परिवार की प्रगति स्नेह का द्वार है
जहां न कोई हो ईर्ष्या द्वेष,प्रेम ही प्रेम
प्रगति करते वही जहां न अभिमान है

विकास की प्रगति रुक जाती वहां पर
जिस समाज में झगड़े फसाद होते हैं
थोड़ी प्रगति पाकर करते हैं जो अहं
क्या समृद्धि, अभिमान का द्वार है

जीवन नेक रास्ते पर हम चलता रहे
हे प्रभु हमको सद्बुद्धि हमेशा देते रहे
धन वैभव और लालच में, करते सदा
क्या समृद्धि, अभिमान का द्वार है

गरीब दुखियों को हम हमेशा देते रहे
सहयोग, जो हर जीवन का आधार है
क्योंकि धन-वैभव से होता अभिमान
क्या समृद्धि, अभिमान का द्वार है।

****